

कक्षा : सातवीं : गतिविधि-परिचय

पूरक पाठ्यपुस्तक	बाल महाभारत कथा
पाठ	विराट का भ्रम
शीर्षक	मेरा अनुभव
समय	दो कालांश
प्रकार	व्यक्तिगत
विद्यार्थी संख्या	एक
कौशल	अनुभव लेखन, चिंतन एवं सृजनात्मकता
आवश्यक सामग्री	रंगीन कागज़ और कलम, कार्यपत्र

चरण:-

1.शैक्षिक अधिगम: -

- * विद्यार्थियों में कल्पनात्मकता, सृजनात्मकता, चिंतन-कौशल का विकास हो सकेगा ।
- * विद्यार्थी अनुभव लेखन कला में निपुण हो सकेंगे ।

2.अध्यापिका गतिविधि :

- * अध्यापिका विद्यार्थियों को पाठ की कहानी को पढ़ने और कहानी पर पुनर्विचार करने का निर्देश देंगी ।
- * तत्पश्चात् कहानी के आधार पर जीवन की किसी घटना का अनुभव साझा करने को कहेंगी जिसमें भ्रमवश मित्र या सम्बन्धी के प्रति द्वेष का भाव आया हो परन्तु सच का पता होने पर प्रायश्चित्त कर खुद में सुधार किया हो।
- *प्रत्येक विद्यार्थी को अनुभव को अपनी कापी में लिखकर कक्षा में उससे मिली सीख को भी बताने को कहेंगी ।
- *अंत में अध्यापिका कार्यपत्र करने के लिए देंगी ।
- *तत्पश्चात् अध्यापिका उनके अनुभव के लिखित रूप का निर्धारित प्रारूप के आधार पर मूल्यांकन करेंगी ।

3. विद्यार्थी -गतिविधि:-

- *अध्यापिका द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार विद्यार्थी पाठ की कहानी को पढ़कर कहानी पर पुनर्विचार करेंगे ।
- *तत्पश्चात् वे अपने जीवन की किसी घटना का अनुभव अपनी कापी में लिखकर कक्षा में उससे मिली सीख को बताएँगे ।
- * अंत में प्रत्येक विद्यार्थी उस अनुभव के लिखित रूप को अध्यापिका को मूल्यांकन के लिए देगे ।
- *सभी विद्यार्थी कार्यपत्र पूरा करेंगे ।

4.मूल्यांकन के मानदंड:-

क्रम संख्या	मूल्यांकन के क्षेत्र	अंक-10
1	विषय की प्रस्तुति	3
2	प्रभावोत्पादकता	3
3	भाषा का स्तर एवं शुद्धता	2
4	कार्य की पूर्णता	1
5	समयबद्धता	1

कार्यपत्र

पाठ: विराट का भ्रम
विद्यार्थी का नाम:

गतिविधि : मेरा अनुभव
अनुक्रमांक:

प्रश्न.1. भ्रम हमें नकारात्मकता देते हैं तथा यही नकारात्मकता हमारे अनुभवों को भी नकारात्मक दिशा देते हैं। इसी प्रकार सजगता से हम सकारात्मक हो अपने अनुभवों को भी सकारात्मक दिशा दे देते हैं। भ्रम और सजगता की भाँति अन्य बहुत से तत्व हैं जो हमारे विचार, व्यक्तित्व और जीवन को अपने अनुसार स्वरूप देते हैं।

1. नीचे दी गई गोलाकार आकृतियों में ऐसे ही नकारात्मक तत्वों को तथा आयाताकार आकृतियों में ऐसे ही सकारात्मक तत्वों को लिखिए।



